साहित्यिक संवाद

प्रो. के. वनजा अभिनन्दन ग्रन्थ

एन. मोहनन
प्रधान संपादक

सजी आर. कुरुप
संपादक

श्यामकुमार एस.
सह-संपादक

अनुज्ञा

वैधानिक चेतावनी
पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन, फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक व प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित आलेख/आलेखों के सर्वाधिकार मूल रचनाकार/रचनाकारों के पास सुरक्षित हैं। पुस्तक में व्यक्त विचार पूर्णतया लेखक/लेखकों अथवा सम्पादक/सम्पादकों के हैं। यह जरूरी नहीं है कि प्रकाशक इन विचारों से पूर्ण या आंशिक रूप से सहमति रखे। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय दिल्ली ही मान्य होगा।

© प्रधान संपादक

प्रथम संस्करण : 2021

ISBN 978-93-89341-70-6

प्रकाशक

अनुज्ञा बुक्स

1/10206, लेन नं. 1E, वेस्ट गोरख पार्क, शाहदरा, दिल्ली-110 032

e-mail : anuugyabooks@gmail.com • salesanuugyabooks@gmail.com

फोन : 011-22825424, 09350809192

www : anuugyabooks.com

मूल्य : 1900 रुपये

आवरण

मीना-किशन सिंह

मुद्रक

सौरभ प्रिंटर्स प्रा. लि.

SAHITYIK SAMVAD

A Festschrift in Honour of ***Prof. K. Vanaja*** *edited by* ***Prof. N. Mohanan, Prof. Saji R. Kurup & Prof. Shyamkumar S***

उदयप्रकाश की कहानियाँ– उत्तराधुनिक सन्दर्भ में –सुब्रह्मण्यन पी. के. 529
भगवानदास मोरवाल कृत 'शकुंतिका' का समीक्षात्मक अध्ययन –राधिका पी. 534
समकालीन हिन्दी उपन्यास में अभिव्यक्त आदिवासी आन्दोलन –इब्राहिमकुट्टी पी.एच 537
आदिवासी जीवन की गूँजती आवाज़ –हेरमन पी.जे 543
स्त्री का राजनैतिक पतन –हेना 548
समकालीन स्त्री केन्द्रित हिन्दी उपन्यासों में घरेलू हिंसा –बीना पैली 556
'मैं पायल' उपन्यास में किन्नर समाज के वास्तविक जीवन का चित्रण –पी. के. प्रतिभा 559
दलित कविता–अमानवीयता के प्रति मानवीयता का विद्रोह –राजेन्द्रन पटिक्कारे करम्मल 563
समकालीन हिन्दी कविता में भूमंडलीकरण –जे. वासन्ती 566
वर्तमान का यथार्थ: सदी के सहयात्री –ए. के. बिन्दु 572
इक्कीसवीं सदी की कविताओं में प्रतिध्वनित दलित नारी चिन्तन : सुशीला टाकभौरे की कविताओं के विशेष सन्दर्भ में –अनिता पी.एल. 578
"समर"– नारी के संघर्षमय जीवन का दूसरा नाम –बिन्दु एस.जी 582
निर्वासन बनाम आत्मनिरास –सजी आर कुरुप 587
पाँच आँगनोंवाला घर-उपन्यास में चित्रित राजनैतिक यथार्थ –मनोज एन. 593
जब कविता मापक यन्त्र बनता है –विजयकुमार ए. आर. 596
बी. टी. की कहानियों में चित्रित स्त्री-जीवन –दीपक के. आर. 600
केरल का दलित नवजागरण : मलयालम उपन्यास 'घातकवधम' के विशेष सन्दर्भ में –राजन टी. के. 606
लेखक की मृत्यु और उत्तर-आधुनिक आलोचना की अवधारणा –सीमा चन्द्रन 612
संघर्ष भरी दास्तान का दस्तावेज़: 'ए जिन्दगी तुझे सलाम' –मेरली. के. पुन्नूस 617
"जब आप" कविता और कवित्त का खुलासा –प्रदीप सी. पी 623
समकालीन आदिवासी कविता और अस्तित्व बोध –लैजा पी जे 625
हिन्दी कहानियों में आम आदमी –जोयिस टोम 630
आदिवासी कविता में पारिस्थितिक बोध –श्यामकुमार एस 650
पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा में ट्रांसजेण्डर विमर्श –संजीव कुमार. के 656
दलित चेतना और दलित नारी –वीणा.जे. 659
समकालीन हिन्दी कविता में ट्रान्सजेण्डर –सीना कुरियन 663
हिन्दी एवं अँग्रेज़ी के विभाजन साहित्य में स्त्री –रूबी एल्सा जेकब 669
एक कहानी यह भी में अभिव्यक्त नारी जीवन –तेरेसा टिनसी टी. जी. 682

पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा में ट्रांसजेण्डर विमर्श

संजीव कुमार के.

"डर, हिकारत, अछूता
हीन, उपेक्षित....
देखकर हमें कुछ यूँ,
है जहाँ सारा, नजरें फेर लेता....
क्या खूब सूझी, तुझे भी ऐ खुदा,
इक कहर है तेरा यह भी, 'अधूरी देह' देना....
-गीतिका वेदिका की कृति 'अधुरी देह' से

इक्कीसवीं सदी विमर्शों की सदी है। चाहे वह नारी विमर्श हो, दलित विमर्श हो, या आदिवासी विमर्श हो। इन विमर्शों के समान्तर एक नया विमर्श अपनी उपस्थिति दर्ज कर रहा है– वह है जेण्डर विमर्श। विश्व में दो लिंग के अलावा एक अन्य प्रजाति के लोग रहते हैं, जो न ही पुरुष के श्रेणी में आते हैं और न ही स्त्री श्रेणी के अन्तर्गत। जिन्हें हम हिजड़ा, जेण्डर, नपुम्सक, खोजा आदि उपनामों से सम्बोधित करते हैं।

चित्रा मुद्गल व्दारा लिखित 'पोस्ट बॉक्स नं.203 नाला सोपारा' (2016) उपन्यास में एक तृतीय लिंगी बालक की वेदना और संवेदना को बताया गया है। यह उपन्यास पत्रकारिता शैली में लिखा गया है। पूरा उपन्यास माँ-बेटे के बीच के संवाद पत्र के माध्यम से है। विनोद उर्फ बिन्नी उर्फ बिमली जन्म से नपुसंकलिंग है, उनके घरवाले समाज के भय के कारण उसे हिजड़ों के हाथ में सौंप देता है। माँ घरवालों से छुपकर पोस्ट बॉक्स व्दारा आये पत्र के माध्यम से अपने बच्चे के साथ बात करती है। बिन्नी कई शिकायत अपनी माँ से करती है।– "तूने, मेरी मा, तूने और पप्पा ने मिलकर मुझे कसाइयों के हाथ मासूम बकरी सा सौंप दिया। मेरी सुरक्षा के लिए कोई कानूनी कार्रवाई क्यों नहीं की? मनसुख भाई जैसे पुलिस अधीक्षक पप्पा के गहरे दोस्त के रहते हुए? वो अपने आप मुझे बचाने के लिए तो आ नहीं सकते थे। मेरे आंगिक दोष की बात पप्पा ने उनसे बाँटी जो नहीं होगी। वरना वह मुझे बचाना जरुर आ जाते"[1]। विनोद के मन में दुनिया को लेकर ही नहीं बल्कि खुद के बारे में भी बहुत अधिक सवाल है। वह अपने माँ से पूछता है–"मंजुल के गोद में सम्भालते हुए मैंने तुझसे प्रश्न किया था, 'मेरे नुन्नू क्यों नहीं है, मा?' तो तूने मुझे बहलाया था। 'बच्चे के जन्मते ही आटे का नुन्नू बनाकर लगाना पड़ता है। तुम्हें भूल गयी तुझे लगाना। लगवा देंगे तुझे भी"[2]। विनोद की ओर से लिखी चिट्ठियों के माध्यम से हिजड़े जीवन की अनगिनत त्रासदियों को प्रस्तुत कर गम्भीर संवेदनशीलता का परिचय देती है चित्रा जी।

बिन्नी के माँ-बाप ने इसे कई डॉक्टरों को दिखाया था। लेकिन किसीसे कोई लाभ नहीं